



National Agricultural Science Fund

राष्ट्रीय कृषि विज्ञान कोष

Indian Council of Agricultural Research

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

**छत्तीसगढ़ में पोल्ट्री फार्मिंग के ग्रामीण
नवाचार: परिवर्तनकारी सफलता की कहानियाँ**

के रूप में उभरकर सामने आई है, जो एकीकृत एवं जलवायु-सहिष्णु कृषि प्रणाली अपनाने की दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करती है।

आर्थिक विश्लेषण

इन पोल्ट्री आधारित नवाचारों के आर्थिक परिणाम स्पष्ट रूप से ग्रामीण उद्यमिता की परिवर्तनकारी क्षमता को दर्शाते हैं। श्री राजेश डिमर ने कम लागत वाले इन्क्यूबेटर का विकास कर तथा कड़कनाथ पालन का विस्तार करते हुए ₹40,000-₹45,000 की स्थिर मासिक आय अर्जित की, जो वार्षिक रूप से लगभग ₹4.8-5.4 लाख के बराबर है। इसी प्रकार, श्री प्रवीण डेहरी के एकीकृत मॉडल, जिसमें पोल्ट्री, बटेर एवं मत्स्य पालन शामिल हैं, से उन्हें ₹60,000-70,000 की मासिक आय प्राप्त होती है, जो त्योहारों के समय बढ़कर ₹1 लाख तक पहुँच जाती है। श्री रंधीराम सोनकर ने 250 से अधिक पोर्टेबल हैचरी इकाइयों का निर्माण एवं विक्रय कर महत्वपूर्ण आय अर्जित की, जिनमें प्रत्येक इकाई की कीमत लगभग ₹40,000 है। अंततः, श्री सुखी राम ने वैज्ञानिक धान उत्पादन, लाथायरस (खेसारी) के समावेशन तथा कड़कनाथ पोल्ट्री पालन के माध्यम से अपनी आय को वर्ष 2016-17 के ₹26,760 से बढ़ाकर वर्ष 2020-21 में ₹4.10 लाख तक पहुँचा दिया। ये आंकड़े न केवल इन मॉडलों की आर्थिक व्यवहार्यता को रेखांकित करते हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि इनका विस्तार ग्रामीण आजीविका को सुदृढ़ करने में अत्यंत प्रभावी सिद्ध हो सकता है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण किसानों द्वारा किए गए नवाचार जैसे वैज्ञानिक कड़कनाथ पालन, स्वदेशी हैचरी विकास तथा तकनीक-सक्षम एकीकृत कृषि प्रणाली यह दर्शाते हैं कि संस्थागत सहयोग से समर्थित स्थानीय समाधान किस प्रकार व्यापक परिवर्तन ला सकते हैं। ये सफलता की कहानियाँ न केवल आय में वृद्धि और आत्मनिर्भरता को प्रतिबिंबित करती हैं, बल्कि देशभर के ग्रामीण युवाओं एवं छोटे किसानों के लिए अनुकरणीय मॉडल भी प्रस्तुत करती हैं। कृषि विज्ञान केंद्र तथा फार्मर्स फर्स्ट कार्यक्रम और किसानों की आय दोगुनी करने की पहल जैसे कार्यक्रमों से निरंतर प्रोत्साहन मिलने पर ऐसे प्रयास ग्रामीण उद्यमिता को गति प्रदान कर सकते हैं, जलवायु-सहिष्णु कृषि को बढ़ावा दे सकते हैं तथा भारत के कृषि समुदायों में सतत आजीविका विकास सुनिश्चित कर सकते हैं।



प्रस्तुतकर्ता :

पी. मूवेन्थन, पी. वेंकटेशन, गुंजन झा, सुमन सिंह एवं हेम प्रकाश वर्मा

अधिक जानकारी हेतु संपर्क: nasf9033nibsm@gmail.com

प्रकाशक :

डॉ. पी. के. राय
निदेशक

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान
बरौंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़- 493225

फोन - 0771-2277333

वेबसाइट - www.nibsm.org

ई-मेल - director.nibsm@gmail.com



ICAR - National Institute of Biotic Stress Management

भाकृअनुप - राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान

Baronda, Raipur, Chhattisgarh - 493225, Ph. 0771-2277333

बरौंडा, रायपुर, छत्तीसगढ़ - 493225, फो. 0771-2277333

Website : www.nibsm.org, E-mail : director.nibsm@gmail.com

ग्रामीण भारत में आजीविका का परिवर्तन प्रायः किसानों की अपनी सीमाओं के भीतर नवाचार करने की क्षमता पर निर्भर करता है। यह लेख छत्तीसगढ़ से चार प्रेरणादायक सफलता की कहानियाँ प्रस्तुत करता है, जहाँ स्थानीय किसानों ने कड़कनाथ पोल्ट्री पालन, कम लागत वाले अंडा ऊष्मायन (इन्क्यूबेशन), एकीकृत कृषि प्रणाली तथा कम लागत हैचरी जैसे नवाचारी तरीकों को अपनाया है। सीमित भूमि, कम औपचारिक शिक्षा और साधारण शुरुआत के बावजूद, इन किसानों ने स्थानीय स्तर पर उपयुक्त तकनीकों और रणनीतिक विविधीकरण के माध्यम से अपनी आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार किया। कृषि विज्ञान केंद्र तथा किसानों की आय दोगुनी करने की पहल ढाँचे के सहयोग से इनके प्रयास ग्रामीण युवाओं और छोटे किसानों के लिए व्यवहारिक एवं विस्तार योग्य मॉडल प्रस्तुत करते हैं। ये सफलता की कहानियाँ न केवल आय वृद्धि और रोजगार सृजन को दर्शाती हैं, बल्कि यह भी स्पष्ट करती हैं कि जमीनी स्तर के नवाचार किस प्रकार जलवायु-सहिष्णु एवं सतत कृषि के भविष्य को आकार दे सकते हैं।

परिचय

ग्रामीण भारत के बदलते कृषि परिदृश्य में छोटे एवं सीमांत किसान अपनी आय बढ़ाने, जोखिम को कम करने तथा आजीविका के विविधीकरण हेतु नवाचारों की ओर अग्रसर हो रहे हैं। विशेष रूप से कड़कनाथ जैसी देशी नस्लों पर आधारित पोल्ट्री फार्मिंग आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है। कृषि विज्ञान केंद्र के संस्थागत सहयोग तथा किसानों की आय दोगुनी करने की पहल जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के किसान स्थानीय स्तर पर नवाचार अपनाकर संसाधनों की कमी को दूर करते हुए सतत आजीविका मॉडल विकसित कर रहे हैं। यह लेख ऐसे ही चार ग्रामीण कृषि उद्यमियों (एग्रीप्रेन्योर्स) की प्रेरणादायक यात्राओं को प्रस्तुत करता है, जिन्होंने पोल्ट्री एवं संबद्ध कृषि गतिविधियों में वैज्ञानिक, यांत्रिक तथा एकीकृत दृष्टिकोण अपनाकर सफलता प्राप्त की है। इनके प्रयास न केवल जलवायु-सहिष्णु, बल्कि तकनीक-सक्षम ग्रामीण उद्यमिता की दिशा में मार्ग प्रशस्त करते हैं।

1. स्वदेशी तकनीक: कम लागत इन्क्यूबेटर – श्री राजेश डिमर

राजनांदगांव जिले के सुरगी ग्राम निवासी श्री राजेश डिमर पोल्ट्री फार्मिंग में जमीनी स्तर के नवाचार का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। आठवीं कक्षा तक शिक्षित एवं सीमित आर्थिक संसाधनों के बावजूद उन्होंने वर्ष 2016 में 100 कड़कनाथ पक्षियों के छोटे समूह के साथ अपना उद्यम प्रारंभ किया। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती अंडों के ऊष्मायन (इन्क्यूबेशन) की उच्च लागत थी, क्योंकि व्यावसायिक इन्क्यूबेटर उनके लिए अत्यधिक महंगे थे। कृषि विज्ञान केंद्र, राजनांदगांव में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने के बाद उन्होंने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्रियों जैसे इंसुलेटेड बॉक्स, हीटिंग एलिमेंट, थर्मोस्टेट तथा आर्द्रता नियंत्रक का उपयोग कर एक

कार्यात्मक एवं कम लागत वाला इन्क्यूबेटर तैयार किया, जो ग्रामीण परिस्थितियों के अनुकूल है।

इस नवाचार के माध्यम से वर्षभर अंडों से चूजे निकलना संभव हुआ, जिससे उनकी मासिक अंडा उत्पादन क्षमता बढ़कर लगभग 5,000-6,000 अंडे हो गई तथा बाहरी हैचरियों पर निर्भरता समाप्त हो गई। वर्तमान में वे लगभग 2,000 कड़कनाथ पक्षियों का प्रबंधन कर रहे हैं और प्रति माह ₹40,000 से ₹45,000 तक की आय अर्जित कर रहे हैं। उनके इस उद्यम ने न केवल स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न किए हैं, बल्कि आसपास के किसानों को भी इस मॉडल को अपनाने के लिए प्रेरित किया है। भविष्य में अपने उद्यम का विस्तार करने और अन्य किसानों को प्रशिक्षण देने की उनकी योजना उन्हें ग्रामीण पोल्ट्री फार्मिंग में आत्मनिर्भरता एवं नवाचार का प्रतीक बनाती है।

2. तकनीक आधारित विविधीकरण: श्री प्रवीण डेहरी का एकीकृत मॉडल

कांकेर जिले के नवागांव निवासी श्री प्रवीण डेहरी ने आधुनिक तकनीक और पारंपरिक कृषि पद्धतियों का प्रभावी समन्वय कर एक सफल एकीकृत कृषि मॉडल विकसित किया है। मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा धारक श्री डेहरी ने अपनी यात्रा की शुरुआत 200 कड़कनाथ पक्षियों, 100 बटेर (केल) और 100 मछलियों के छोटे सेटअप के साथ की। अपनी तकनीकी दक्षता का उपयोग करते हुए उन्होंने एक कम लागत वाला उन्नत इन्क्यूबेटर विकसित किया, जिसमें डिजिटल तापमान एवं आर्द्रता सेंसर, स्वचालित अंडा पलटने की व्यवस्था तथा अलार्म प्रणाली शामिल है। इस नवाचार के माध्यम से उन्होंने लगभग 85 प्रतिशत तक हैचिंग सफलता (हैचेबिलिटी) प्राप्त की।

समय के साथ उन्होंने अपने उद्यम का विस्तार करते हुए 400 कड़कनाथ पक्षी, 1500 बटेर, 300 देशी मुर्गियाँ तथा 6000 रोहू, कतला और तिलापिया मछलियों से युक्त मत्स्य इकाई को 4.5 एकड़ क्षेत्र में विकसित किया। उनके एकीकृत मॉडल में पोल्ट्री के अपशिष्ट (मल) का उपयोग मछली तालाब के लिए जैविक खाद के रूप में किया जाता है, जिससे चारे की लागत में कमी आती है और प्रणाली की सततता (सस्टेनेबिलिटी) बढ़ती है। शुरुआत में लगभग ₹10,000 प्रति माह की आय से आगे बढ़ते हुए आज वे नियमित रूप से ₹60,000-70,000 प्रति माह कमा रहे हैं, जबकि त्योहारों के समय उनकी आय ₹1,00,000 तक पहुँच जाती है। उनका यह मॉडल वर्तमान में कृषि उद्यमिता कार्यशालाओं में प्रदर्शित किया जा रहा है और यह ग्रामीण नवाचार तथा सतत आजीविका विकास का एक उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय उदाहरण बन चुका है।

3. कम लागत हैचरी: श्री रंधीराम सोनकर का नवाचार

छत्तीसगढ़ के राजनांदगांव जिले के श्वेताटोला ग्राम के प्रगतिशील किसान श्री रंधीराम सोनकर ग्रामीण पोल्ट्री फार्मिंग में नवाचार के एक प्रेरणास्रोत के रूप में उभरे हैं। लगभग 9 वर्षों के अनुभव और मात्र 1.5 एकड़ भूमि के साथ, उन्होंने वर्ष 2017-18 में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए कम लागत

वाली, पोर्टेबल हैचरी सह ब्रूडर मशीन का निर्माण किया। कृषि विज्ञान केंद्र, राजनांदगांव के तकनीकी मार्गदर्शन में उन्होंने इस कॉम्पैक्ट उपकरण को विशेष रूप से छोटे एवं सीमांत किसानों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित किया, जो महंगी व्यावसायिक हैचरियों तक पहुँच नहीं बना पाते।

उनकी यह उपयोगकर्ता-अनुकूल हैचरी कड़कनाथ, वनराज, बटेर, बतख एवं हंस जैसे विभिन्न पोल्ट्री प्रजातियों के अंडों के ऊष्मायन के लिए उपयुक्त है, जो इसे एक किफायती एवं ऊर्जा-कुशल विकल्प बनाती है। यह उपकरण एक बार में लगभग 100-150 अंडों को समायोजित कर सकता है तथा इसमें थर्मल बॉक्स, हीटिंग कॉइल, पंखा, एलईडी लाइट और तापमान एवं आर्द्रता नियंत्रित करने हेतु एकल-बटन प्रणाली जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। लगभग 37°C के स्थिर तापमान पर संचालित होने वाली यह मशीन उच्च हैचिंग दर सुनिश्चित करती है (जैसे कड़कनाथ के लिए 21 दिन तथा जापानी बटेर के लिए 18 दिन)। इस नवाचार के माध्यम से उन्होंने न केवल अपनी पोल्ट्री उत्पादन क्षमता में वृद्धि की, बल्कि अब तक 250 से अधिक ऐसी मशीनों का निर्माण एवं विक्रय (प्रत्येक की कीमत लगभग ₹40,000) कर एक नया आय स्रोत भी विकसित किया है। इसके साथ ही, उनके इस प्रयास ने क्षेत्र में तकनीकी प्रसार को भी बढ़ावा दिया है। उनका यह नवाचार इस बात का सशक्त उदाहरण है कि स्थानीय स्तर पर विकसित तकनीकें किस प्रकार ग्रामीण समुदायों को सशक्त बना सकती हैं, स्वरोजगार को बढ़ावा दे सकती हैं तथा सतत कृषि पद्धतियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

4. कड़कनाथ पोल्ट्री के माध्यम से वैज्ञानिक विविधीकरण: श्री सुखी राम की कहानी

छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार जिले के खरौं ग्राम के 28 वर्षीय किसान श्री सुखी राम ने मात्र 2.02 एकड़ भूमि और पारंपरिक धान खेती की पृष्ठभूमि के साथ अपनी कृषि यात्रा प्रारंभ की। दसवीं कक्षा तक शिक्षित एवं सीमित संसाधनों के बावजूद उन्होंने किसानों की आय दोगुनी करना पहल तथा फार्मर्स फर्स्ट कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लिया। इन कार्यक्रमों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर उन्होंने धान की खेती में वैज्ञानिक पद्धतियाँ अपनाईं, जैसे कतार बुवाई, उन्नत किस्मों का उपयोग तथा संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन। इसके साथ ही उन्होंने धान की परती भूमि का उपयोग लाथायरस (खेसारी) की खेती के लिए करना शुरू किया, जिससे अतिरिक्त आय का स्रोत विकसित हुआ।

आय के विविधीकरण को और सुदृढ़ करने हेतु उन्होंने 1 एकड़ क्षेत्र में कड़कनाथ पोल्ट्री इकाई स्थापित की, जिससे उनकी मौसमी फसलों पर निर्भरता काफी हद तक कम हो गई। उनके इन प्रयासों से धान की उत्पादकता में 42 प्रतिशत की वृद्धि हुई तथा 0.5 एकड़ में लाथायरस की खेती से ₹7,150 की आय प्राप्त हुई। सबसे उल्लेखनीय उपलब्धि उनकी पोल्ट्री इकाई रही, जिससे उन्हें ₹3.61 लाख का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। कुल मिलाकर उनकी वार्षिक आय वर्ष 2016-17 में ₹26,760 से बढ़कर वर्ष 2020-21 में ₹4.10 लाख हो गई, जो लगभग 14 गुना वृद्धि को दर्शाती है। उनकी सफलता छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए एक प्रेरणादायक मॉडल